रिकॉर्ड :– बचपन के दिन भुला न देना..... ॐ पिताश्री 13/8/63
ओऽम् शांति। अब यह कौन वॉर्निंग देते हैं? बेहद का बाप बच्चों को समझाते हैं। आत्माओं का बाप भी और फिर जीवात्माओं का भी। आत्मा का बाप है, उनका नाम है शिव। फिर बहुत भाषाएँ होने कारण अनेक नाम पड़ जाते हैं। 100–200 मील के बाद अ(लग) भाषाएँ हो जाती हैं। हम प० को शिव कहते हैं। अंग्रेज लोग कहेंगे– गॉड फादर, सुप्रीम सोल, इनकारपोरियल। अपन कहेंगे, परमपिता प०, निराकार शिव। वह है नई दुनिया स्वर्ग रचने वाला। अंग्रेज लोग कहेंगे, हेविनली गॉड फादर। भाषा में अन्तर है ना! गुजराती, सिक्ख लोग फिर और नाम कहेंगे। वास्तव में है तो एक। तुम बच्चे जानते हो, मेरा तो एक, दूसरा न कोई। हम अपने बाप को ही जानती है। इस देह सहित और सबको भूल जाते हैं। बाबा ने जो देह ली है उसको भी छोड़ देते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि मेरे तो ब्रह्मा बाबा, नहीं, मेरा तो शिवबाबा दूसरा न कोई। हम हैं ही उनके बच्चे अशरीरी। यह बेहद का नाटक है ना। सबसे पहला पार्ट है ही भारत का। यह हार–जीत का खेल भी समझाया गया है। (84) जन्म कोई दूसरे धर्म वाले नहीं लेते हैं। राज्य हरा कर फिर जीतने वाले दूसरे कोई नहीं होते हैं। एक ही देवी–देवता धर्म है। भारतवासी वास्तव में सब हैं एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म के। झाड़ का राज़ भी अच्छी रीति समझना है। अनेक धर्मों का यह कल्पवृक्ष दिखाया है। तो भारतवासी असल में हैं आदि सनातन देवता धर्म के। फिर इसमें आकर फ्रिक्शन पड़ती है, वृद्धि होती जाती है। वास्तव में सब हैं (एक)। विलायत में इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन धर्म वाले हैं। एक ही क्रिश्चियन धर्म कितना फैला हुआ है। कितनी भाषाएँ हैं! फिर नाम भी बदल लेते हैं। हैं तो सब क्रिश्चियन। एक–2 डार से फिर टार–टारियाँ कितनी निकलती हैं। यह है आदि सनातन देवी–देवता धर्म। उनसे फिर सन्यासियों का धर्म, राधा स्वामी, आर्य समाजी, ब्रह्मसमाजी, चिंदा काशी आदि। वास्तव में हैं एक। फिर (इन्हों) की भाषाएँ बदल जाती हैं। इसको कहा जाता है वैराइटी धर्मों का झाड़। पहले–2 है आदि सनातन देवी–देवता धर्म। फिर इस धर्म से अ..... ब्राचेज़ निकलती हैं। जपानी–चीनी आदि असल बुद्ध धर्म के हैं। फिर .... आदि अनेक नाम निकले हैं। वास्तव में हैं ही 4 धर्म। ब्राह्मणों का पाँचवा धर्म भी वास्तव में भारत का हो गया। वास्तव में है डीटीज़्म, इस्लामिज़्म, बुद्धिज़्म, क्रिश्चियनिज़्म। यह सारा झाड़ बुद्धि में बैठना चाहिए। दूसरे मनुष्य तो इन बातों (को) नहीं जानते। न कल्पवृक्ष की रचना को जानते, न रचयिता को जानते। ऋषि–मुनि आदि तो नेती–(2) कह चले गए, हम नहीं जानते। सतयुग से लेकर कोई भी नहीं जानते। अगर जानते हो तो एक/दो को समझावे। सन्यासी भी कहते, हम बाप और उनकी रचना को नहीं जानते। इसलिए इनको कहा ही जाता है नास्तिक दुनिया। बाप को न जानने वाले हेविनली गॉड फादर अक्षर कहते हैं; परन्तु जानते बिल्कुल न(हीं) कि हेविन किसका नाम है। सतयुग को लाखों बरस लगा दिया है; इसलिए बाप आकर सारे झाड़ का भी राज़ समझाते हैं, जो फिर तुमको औरों को समझाना है। सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का ज्ञान सुनना और सुनाना है, नहीं तो बाप और रचना को कैसे जानेंगे! मनुष्य का ही फर्ज़ है, जानवरों का तो नहीं। (माँ)–बाप और रचना को न जानते तो इसको नास्तिक कहा जाता है। नास्तिक कितने दुखी बनते हैं। बाप ..... आस्तिक बनने से बाप से वर्सा लेते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है– न जानना ड्रामा में नूँध है। फिर जानना (ही) नूँध है। जानने से राज्य–भाग्य लेते हैं। किस द्वारा जानते हैं? निराकार से। उनको ही कहा जाता ... सृष्टि का बीज। मनुष्य को नहीं कहा जाता। उन झाड़ों का बीज धरती में होता है। झाड़ ऊपर होता है। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीज ऊपर में है, झाड़ नीचे है। इनका (नाम) ही है उल्टा वृक्ष। नहीं (तो) झाड़ का बीज हमेशा ज़मीन में होता है, फिर पिछाड़ी में बीच आकर ऊपर ख(ड़ा) हो जाता है; जैसे आम का भी बीज बोया जाता है, फिर पिछाड़ी में वो बीज निकल आता है। अब इस झाड़ का बी(ज) है निराकार। यूँ तो आम का भी बीज निराकार हो गया। निराकार बीज डालेंगे तो फिर सा...

..... निकलेगा। हम सभी वास्तव में हैं निराकार बीज के निराकार बच्चे। हम आत्माएँ सभी उनके बच्चे हैं। फिर यहाँ आने से मनुष्य हो जाते हैं। निराकार से साकार हो जाते हैं। बाबा बीज, हम भी बीज यहाँ आकर, शरीर धारण कर, फिर वस्त्र पहनते हैं। कोई बैरिस्टर, कोई इंजीनियर बनते हैं। शरीर के साथ फिर पार्ट बजाने लिए वस्त्र धारण करते हैं। तुम बच्चे डीटेल में जानते हो कि यह ड्रामा हार और जीत का कैसे बना हुआ है। भारत ही स्वर्ग, भारत ही नर्क बनता है। शुरू से लेकर आलराउण्ड इन्हों का पार्ट है। यह खेल है हार–जीत का। वो तो लड़कर एक/दो से राजाई लेते हैं। यहाँ तो बाप आकर राजधानी देते हैं, जो आधा कल्प चलती है। फिर माया छीन लेती है। इसमें लड़ाई की बात नहीं। यह है माया से हार, फिर माया पर जीत। हम देवी–देवता बनते हैं, फिर माया 5 विकार हराते हैं। हम स्वर्गवासी देवी–देवताएँ फिर नर्कवासी, मलेच्छ, पत्थरबुद्धि, तु(च्छ), बेसमझ बन जाते हैं; जैसे बन्दर से भी बदतर बन जाते हैं। हम भी आगे नहीं समझते थे कि हम बंदर हैं। आगे हम देवता थे। अभी बाप समझाते हैं, तुम सो देवता थे, तुम सो ल०ना० थे, अब तुमने हराया है। सत्य ना० की कथा है ना– नर से ना० बने, फिर ना० से बन्दर बने। 5 विका(रों) ने तुम्हारी शिकल काली, बेसमझ बना दी है। इतना दिन यह पता न था कि ल०ना० पूज्य थे। हम छी–2 होने कारण उन्हों को पूजते थे। अभी बाबा बतलाते हैं, तुम सो पूज्य थे। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राज्य करते थे। अब फिर तुमको ऐसा बनाते हैं। हम सो पूज्य थे, फिर पुजारी बने। हम सो अक्षर अभी का है। उन्होंने अर्थ ही उल्टा कर दिया है कि हम आत्मा सो प०, प० सो हम आत्मा। हम भी आगे ऐसे कहते थे। अब समझते हैं, हम सो देवता 84 जन्मों का चक्कर लगाए, अब हम शूद्र, कौड़ी तुल्य बन गए हैं। फिर जो पूज्य बनने वाले होंगे वो ही ड्रामा अनुसार। हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह अब है पाण्डव गवर्मेन्ट, फिर पाण्डव गवर्मेन्ट सो दैवी गवर्मेन्ट बन जाती है। अब पण्डों की गवर्मेन्ट है। बाबा पण्डा है ना। हम भी अपन को पण्डे समझते हैं। इस देह का (भान) निकालते जाते हैं। यह बहुत डर्टी चोला हो गया है। अब हम इनका त्याग करते हैं। बुद्धि में है भविष्य में फिर नई प्रकृति बन जावेगी, फर्स्ट क्लास शरीर मिलना है। देह का त्याग करने से शरीर छूटा। शरीर छोड़ा तो कहेंगे मर गया। कहाँ गया? जाकर दूसरे जगह जन्म लिया। पुनर्जन्म तो लेते हैं ना। अभी तुम बाप के धर्म के बच्चे बने हो मुखवंशावली। बाकी सारी दुनिया है कुखवंशावली। प्रजापिता ब्रह्मा है। तो प्रजा कितनी बढ़ती जावेगी। यह है मुखवंशावली। जो आकर कहते हैं मुख से मम्मा–बाबा तो मुखवंशावली ठहरी। अंग्रेजी में कहा जाता है एडॉप्टेड चिल्ड्रेन्स। एडॉप्टेड चिल्ड्रेन्स और नॉन एडॉप्टेड। धर्म के बच्चे मातेले और सौतेले। इन जैसे बनो तो गोद में ले सकते हैं। फिर ब्रह्मचर्य में रहना पड़े। फिर ब्राह्मण कुलभूषण भाई–बहन हो जावेंगे। ब्राह्मणों की रसम–रिवाज़ ही अलग है। फिर भाई–बहन का नाता है सच्चा। वो लोग भल आपस में भाई–2 कहते हैं; परन्तु हैं नहीं। यहाँ तुम ब्राह्मणों की रसम–रिवाज़ ही एक है। हम आत्मा के रूप में शिवबाबा के बच्चे, जिस्म के रूप में ब्रह्मा के बच्चे भाई–ब(हन) हो गए। विकार की बात उठ न सकती। नो क्रिमिनल एसाल्ट। ब्राह्मण कुल भूषण बन, मम्मा–बाबा कह और अगर क्रिमिनल एसाल्ट किया, तो बाबा कहते हैं– उनकी खल उतारी जावेगी। उनकी फिर सज़ा भी बहुत भारी है। एक शास्त्र में मोरध्वज–ताम्रध्वज की भी कहानी है ना। अभी तुम बहुत ऊँच ते ऊँच बनते हो। कोई विकार में गया तो खलास। अशुद्ध अहंकार आने से ही फिर गिरते हैं। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में कल्पवृक्ष नटशेल में है– बीज और झाड़। यह है मनुष्य सृष्टि का वैराइटी धर्मों का झाड़। यह धर्म फिर जब अधर्मी विकारी बन जाते हैं, तो फिर उनसे अधर्म ही होता रहता। देवी–देवता धर्म सभी से ऊँच धर्म है। सभी से जास्ती सुख इस धर्म वालों को मिलता है। वहाँ पवित्रता, सुख–(शांति) भी है। दूसरा धर्म ही नहीं, जो ठक–2 हो। यहाँ तो देखो, कितना आपस में लड़ते रहते हैं। पंचायत भी (आपस)

में (ल)ड़ते रहते। पंचायती राज्य भी चल न सकता। पंचों में वो ताकत नहीं है। राजाओं में तो फिर भी ताकत रहती है; क्योंकि ईश्वर अर्थ दान करने से राजाई पद मिलता है तो ताकत रहती है। प्रजा में तो कुछ भी ताकत नहीं। प्रजा का प्रजा पर भी राज्य ... होना है। जब कोई ताकत न रहे तब तो फिर विनाश हो। कोई भी अपने को बचा न सकेंगे। अभी तो देखो, अपने को खत्म करने लिए मूसल निकाले हैं। पेट से नहीं, बल्कि यह बुद्धि से साइंस निकाली है, अपने ही कुल का विनाश करने। बाबा पर कोई दोष थोड़े ही रख सकते। बाबा ने युक्ति ऐसी रची है जो कोई भी नहीं जानता। आपस में ही लड़–झगड़ खत्म हो जावेंगे। बाबा थोड़े ही किसी को मारते हैं। दिखाते हैं, स्वदर्शन चक्र से मारा है। यह है सब नॉनसेंस बातें। स्वदर्शनचक्र, गदा, कमल का फूल आदि जो हैं, इन सबका अर्थ तुम अब समझ गए हो। तुम जानते हो, हमको कमल फूल समान पवित्र रहना है। गदा है माया को मारने लिए। चक्र है सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान। वो बुद्धि में फिरता रहता है। तुम लाइट हाउस हो। तुम सब युगों को जानते हो, सतयुग–त्रेता..... यह चक्र है ना। इसको जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। ड्रामा का राज़ भी बड़ा सहज है। इसमें भी आदि सनातन है डीटीज़्म। आधा कल्प दो पार्ट में चलता है, फिर और धर्म आते हैं। हमारा धर्म भी है; परन्तु प्रायःलोप हो जाता है। सिर्फ निशान रह जाते हैं। मनुष्य यह नहीं जानते कि ल०ना० ने कब और कि(तना) समय राज्य किया। अब बाबा ल०ना० का चित्र बनवा रहे हैं। उनमें लिखना है ल०ना० के वंश का संवत– 1250 वर्ष तक सूर्यवंशी राज्य चला। फिर सूर्यवंशी से चंद्रवंशी बने। चंद्रवंशी घराने में 1250 वर्ष राज्य किया। फिर द्वापर से इस्लामी, बौद्धी आए, इनको इतने वर्ष हुए। यह सारी हिस्ट्री–जॉग्राफी तुम्हारी बुद्धि में है। और कोई त्रिकालदर्शी है नहीं। ज्ञान का तीसरा नेत्र किसी को है नहीं। इसको कहा जाता है तीसरा नेत्र, दिव्य चक्षु। आत्मा पढ़ती है इन ऑरगन्स द्वारा। तुम्हारी आत्मा कहेगी, हम अब देवता बनते हैं। आत्मा ही पुण्यात्मा और पापात्मा बनती है। आत्मा अब शूद्र बनी है। अभी तमोप्रधान चोला मिला है, फिर आकर फर्स्ट क्लास चोला पहनेंगे। बाप समझाते हैं, तुम देही(देह)–अभिमानी बन गए थे, अब देही–अभिमानी बनो। आत्मा ही सुनती है और आत्मा सुनाती है। धारणा भी आत्मा करती है ऑरगन्स द्वारा। मैं भी इस मुख द्वारा मुरली सुनाता हूँ। काठ की मुरली की बात नहीं। परमपिता प० इस मुख का आधार ले ब्रह्माण्ड, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन के आदि–मध्य–अंत का सारा राज़ सुनाते हैं। वो है निराकारी दुनिया। नो कारपोरियल शरीर। बरोबर वहाँ बिगर शरीर आत्माएँ रहती हैं बाप के साथ। कहा जाता है, बाप सभी को भेज देते हैं। यह सिर्फ समझाने लिए कहा जाता है। बाप कहते हैं क्राइस्ट आदि सभी आत्माओं को भेज देता हूँ। फिर मैं यहाँ आता हूँ, तो ब्रह्मा की आत्मा को आकर शृंगार करता हूँ। तुम भी ज्ञान से शृंगारे जाते हो। यह है ही त्रिकालदर्शी बनने का ज्ञान। मैं भी चेतन हूँ। आत्मा सत्, चित, चेतन है। अब तुम पतित से पावन बन रहे हो। इस समय तुम ज्ञान सागर के बच्चे, मास्टर ज्ञान सागर बन, ज्ञान नदी बन रहे हो। इस समय जो बाप की महिमा है, वो तुम्हारी। वो प्यार का सागर है, तुमको भी मास्टर प्यार का सागर बनना पड़े। वो ज्ञान सागर है, तुम मास्टर ज्ञान सागर बने हो। पवित्रता का भी सागर बन रहे हो। तुम्हारी पवित्रता 21 जन्म चलती है। फिर सतयुग में तुम्हारी महिमा हो जाती है– सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण..... बाप की महिमा अलग है। इस समय तुम ब्राह्मणों की महिमा अलग, फिर भविष्य देवताओं की महिमा अलग। फिर 16 कला से 14 कला चंद्रवंशी बन जाते हैं। फिर वो महिमा उड़ जाती। अभी फिर हम सो देवता बन रहे हैं। यह सारा राज़ समझ और समझाना है। तुम्हारी प्रतिज्ञा है– बा(बा), आपसे सु(न) कर फिर और को सुनाए, आप समान सो देवता बनाऊँगी। बच्चे सर्विस करते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अ....। तुम जानते हो, हम बेहद बाप के बच्चे बने हैं, फिर बेहद के मालिक बनेंगे। अगर उनका

कलियुगी संबंध में गए, तो फिर रोना पड़ेगा। बाबा ने समझाया है, उस समय सभी जन्मों के किए हुए पापों का सा० कराए, सज़ा देता जाऊँगा। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। ट्रेटर बने तो चण्डाल जाकर बनेंगे। बहुत पाप भी करते हैं ना। अगर बच्चा बन, घर में रहते फिर भी किया तो सौणा दंड भी मिलता और पद भी भ्रष्ट होता है। फर्क तो है ना। भल सुखी तो सभी होंगे, प्रजा भी सुखी होगी। फिर भी पद तो नम्बरवार है ना। ऐसे नहीं, सूर्यवंशी के दास–दासी बने वा प्रजा बने। हर एक को पूरा अपना शो करेंगे। बीती को बीती देखते जाओ। बाबा के अच्छे–2 बच्चे आज है, कल मर जाते हैं। कोई कहेंगे .... क्या बाबा संभाल क्यों नहीं करते बच्चों की। अरे, यह तो उनको एक शरीर छोड़ दूसरा लेना है। हम साक्षी हो, हँसते–खेलते हैं। समझते हैं, फलाणा मर गया। अम्मा मरे तो भी हलवा खाना, बाप मरे तो भी.....। सभी अपना पार्ट बजाते हैं। साक्षी हो देखने से अशरीरी हो रहना पड़े। साक्षी हो ड्रामा को देखते हैं। यह ड्रामा में नूँध है। विघ्न भी आते हैं ना। कोई कहते, परमपिता प० तो समर्थ है फिर विघ्नों से दूर क्यों नहीं करते? विघ्न तो गाए हुए हैं। रुद्र ज्ञान यज्ञ में असुर ज़रूर विघ्न डालेंगे। अत्याचार होंगे। अब तुम बच्चे सुनते हो। सुनकर धारण करना है। माँ–बा(प) को फॉलो करना है। 5 विकारों को पूरा जीतना है। घड़ी–2 हार न खानी है। कई बच्चे भूल को छुपाते भी हैं। ऐसे नहीं, हम विकार में गए, शिवबाबा तो जानते हैं। ऐसे कह छोड़ न देना है, साकार को ज़रूर बताना है। बाप बिगर डाडा कैसे मिल सकता। डाडे और पौत्रे के बीच में है बाबा। बाबा के बच्चे न बने तो डाडे के कैसे बनेंगे! डायरैक्ट बन न सके। बीच में बाप ज़रूर चाहिए। कोई पाप करते हैं तो मीडियम बीच वाले बाप को ज़रूर सुनाना पड़े। वो सुनेगा मैं सुनता जाऊँगा। बच्चे, बहुत बच्चे छुपाते हैं। बतलाते नहीं हैं। लज्जा आती है। सर्जन को बीमारी न सुनावेंगे तो दवा कैसे करेंगे! वो फिर बीमार पड़ जावेंगे। बतावेंगे नहीं, तो इनको कैसे पता पड़े, सावधानी कैसे देवें। यह भी सुनेंगे तब तो सावधानी देंगे। तुम भी सर्जन हो– कोई बड़ा, कोई छोटा। सर्जन भी नम्बरवार होते हैं ना। तुम्हारे में भी कोई बहुत कमाई करते हैं, कोई थोड़ी करते हैं। कोई तो बिल्कुल सीखते नहीं, तो जाकर दास–दासी बनेंगे। पूरा पढ़ना चाहिए। सीखकर फिर और को इंजेक्शन लगाना पड़े। यह इंजेक्शन लगाना बहुत सहज है। वो इंजेक्शन तो गर्म करो, दवाई डालो। इसमें तो सिर्फ शिवबाबा और वर्से को याद करना है। बस। कितना सहज है। एक है हेल्थ का इंजेक्शन, एक है वेल्थ का इंजेक्शन। सम्पत्ति से ही सुख मिलता है। अभी बाप आकर बेहद की सम्पत्ति, बेहद का सुख देते हैं, जि(स)से तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। जो अभी बने सो बने, फिर कल्प–2 वो पद मिलता रहेगा; इसलिए बहुत खबरदारी रखनी चाहिए। अपने सुख के लिए बाप से पूरा वर्सा लेना है। जन्म–जन्मांतर का तोशा(तोफा) बनाते हो। पूरा पुरुषार्थ करना है। फॉलो फादर–मदर। बाबा–मम्मा कहते हैं तो पूरी हिम्मत रखनी है। हम तख्तनशीन होकर दिखावेंगे। सर्विसेबुल बच्चे छुप नहीं सकते। बाबा–मम्मा जानते हैं, कौन कैसे सर्विस कर रहे हैं, किस पद के अधिकारी हैं। बहुत सर्विस करनी है। ज्ञान नदी बनना है। सागर तो बाबा है ही। यह ब्रह्म पुत्रा, यह सरस्वती नदी है। कोई गंगा, कोई जमुना, कोई गोदावरी है। बहुत नदियाँ हैं। ज्ञान सूर्य, ज्ञान चंद्रमा, ज्ञान सितारे। सितारे भी कोई बहुत चमक वाले होते हैं, कोई थोड़े। यह है ज्ञान की बातें। तुम जानते हो ज्ञान की चमक जास्ती किसमें है। पूरी दौड़ी पहननी चाहिए। शिवबाबा का चित्र ले जाए सर्विस करो। साकार को नहीं जानेंगे। यह तो निराकार है। साकार मनुष्य मात्र सभी पतित हैं। वो बेमुख ही करते हैं। कृष्ण को याद करते। कृष्ण पुरी में कोई नहीं जा सकते, भल कितना भी कृष्ण का भक्त हो। सा० कर सकते हैं, वहाँ जा न सकते। .... शिवबाबा को सलाम करना पड़े। वो भेज सकते हैं। अब त्योहार तो सभी पूरे हुए; परन्तु सर्विस पर तो स... रहना ही है। अच्छा, सिकीलधे बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ